Changing Nature of Economic Activities:

Mining and Forestry

Changing Nature of Economic Activities

- परिवर्तन प्रकृति का नियम है।
- प्रकृति मे हमेशा कुछ न कुछ बदलाव होते ही रहते हैं। कुछ बदलाव प्रकृति स्वयं करती हैं तो कुछ बदलाव जीवों द्वारा भी किए जाते हैं।
- प्रौद्योगिकी के विकास के कारण मानव सभी जीवों से अधिक एवं तेज गति से प्रकृति में परिवर्तन कर रहा है।
- आर्थिक लाभ एवं अपने जीवन को आरामदायक बनाने के लिए मानव प्राचीन काल से ही तात्कालिक परिस्थितियों को बदल कर उन्हें और उन्नत करता आ रहा है।
- लेकिन पिछले लगभग 200 वर्षों में मानव ने उच्च तकनीकी विकास के कारण परिवर्तन की इस गति को अत्यधिक बढ़ा दिया है।
- अतः वर्तमान में मानव द्वारा की जाने वाली प्रत्येक क्रिया एवं उससे निर्मित वस्तु की प्रकृति में लगातार परिवर्तन हो रहा है।

Mining and Forestry

- खनन एवं वानिकी एक दूसरे के विरोधी माने जाते हैं। जहां खनन कार्य अधिक होता है वहां की वनस्पति नष्ट हो जाती है और कई पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

- वैज्ञानिक विकास के कारण अन्य मानवीय क्रियाओं की तरह प्रारंभिक युग से आज तक खनन एवं वन उद्योग की प्रकृति में निरंतर परिवर्तन होता रहा है।

Mining

- प्रारंभिक यूग में खाने खोदने, शिकार करने आदि के लिए लकड़ी या पत्थर, हड्डियों आदि के बने औजार काम में लाए जाते थे लेकिन धीरे–धीरे आदि मानव ने पृथ्वी पर पाए जाने वाले अनेक खनिजों का उपयोग करना आरंभ किया।

- प्रांरभ में जिन खनिजों का उपयोग औजार बनाने में किया जाता था आज उनका उपयोग बड़ें पैमाने पर व्यावसायिक तौर पर अनेक वस्तुएं बनने के लिए किया जा रहा है। अतः यह खनन की बदलती प्रकृति का ही परिणाम है।

Changing Nature of Economic Activities: Mining

- खनिजों के खोज की तकनीकी में परिवर्तन
- खनन उपकरणों एवं उनकी तकनीकी में परिवर्तन
- खनिज परिवहन की प्रकृति में परिवर्तन
- खनिज उपयोग की प्रकृति में परिवर्तन
- खनिजों के निर्यात में वृद्धि
- खनिज उत्पादन की मात्रा में वृद्धि
- खनिज आधारित उद्योगो में वृद्धि

Changing Nature of Economic Activities: Forestry

- वानिकी **(Forestry)**–वनों के सृजन **(Creating)**, प्रबन्धन **(Managing)**, उपयोग **(Using)**, संरक्षण **(Conserving)**, देखरेख **(Repairing)** से संबंधित विज्ञान एवं कला **(Science and Craft)** जिसमें आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी ध्यान दिया जाता है, वानिकी कहलाता है।

Changing Nature of Economic Activities: Forestry

• वन वस्तु संग्रह वास्तव में मानव का सबसे प्राचीन व्यवसाय है। प्रांरभिक अवस्था में ही मानव वनों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का संग्रह एवं तत्काल उपयोग करता था। अब वन वस्तुओं का संग्रह व्यापार के लिए किया जाता है। संग्रहकर्ता वनों में उपयोगी वस्तुएं एकत्र करके तथा उनका साधारण परिष्कार करके बाजार में बेच देता है। अनेक प्रकार की वस्तुएं, विविध जड़ी–बुटियां, बीडी, दवा आदि के लिए कुछ विशेष वृक्षों की पत्तियां, विविध फल–फुल, नारियल, बादाम, केला, रबर, गोंद एकत्र किए जाते हैं।

Changing Nature of Economic Activities: Forestry

- वानिकी के उद्देश्य की प्रकृति में परिवर्तन–पेट पालना अब व्यापार।
- वानिकी क्रिया के क्षेत्रफल में परिर्वतन–वन क्षेत्र घट रहा है।
- वानिकी के स्तर की प्रकृति में परिवर्तन–गुणात्मक वृद्धि, मात्रात्मक वृद्धि
- उपकरणों एवं उनकी तकनीकी की प्रकृति में परिवर्तन
- लकड़ी निर्मित वस्तुओं की मांग में परिवर्तन–निर्यात बढ़ा
- लकड़ी के उपयोग की प्रकृति में परिवर्तन
- वनोत्पाद के परिवहन की प्रकृति में परिवर्तन
- कागज एवं फर्निचर उद्योग की प्रकृति में परिवर्तन–पहले नहीं थे अब निरन्तर बढ़ रहे हैं।
- वन कटाई की वैज्ञानिक विधियों का विकास

निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि खनन एवं वानिकी की प्रकृति प्रौद्योगिकी विकास एवं बढ़ती जनसंख्या के साथ लगातार बदल रही है। प्रारंभ में ये क्रियाएं अधिक नहीं होती थी अतः पर्यावरण को अधिक नुकसान नहीं हुआ लेकिन वर्तमान में इनके बढ़ने से पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ गया है। वर्तमान में व्यक्तिगत, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर इन संसाधनों के संरक्षण की महती आवश्यकता है।